









संक्षिप्त समाचार

पाकुड़: एमएसएमई उद्यमियों के लिए एक दिवसीय निशुल्क उद्यम पंजीकरण शिविर 13 दिसंबर को

पाकुड़ जिले में एमएसएमई उद्यमियों और नई इकाइयों के बढ़ावा देने के उद्देश्य से उद्योग विभाग के निर्देशनुसार एक दिवसीय जागरूकता और पंजीकरण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी प्रबंध नियंत्रण, जिडिया, राची के निर्देशनुसार जारी की गई है। शिविर 13 दिसंबर को दोपहर 12:30 बजे आरंभ होने के सभी उद्यमियों और व्यवसायिक इकाइयों का निशुल्क उद्यम पंजीकरण किया जाएगा। अधिकारियों के अनुसार, शिविर को उद्देश्य जिले में स्थापित हो रहे सूखम, लघु और मध्यम उद्यमों (MSME) को आसान पंजीकरण सुविधा प्रदान करना और उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाना है। प्रशासन ने जिले के सभी उद्यमियों, व्यवसायियों और इच्छुक नागरिकों से अपील की है कि वे निश्चित तिथि को शिविर में अवश्य भाग लें। पंजीकरण के लिए आशयक दस्तावेज साथ लाना अनिवार्य है। इन दस्तावेजों में शामिल हैं—

आधार कार्ड

पैन कार्ड

बैंक पासवर्क

आधार से लिंक मोबाइल नंबर

शिविर में शामिल होने वाले उद्यमियों को पंजीकरण के साथ-साथ सरकारी योजनाओं, समिती और अन्य लाभों की जानकारी भी प्रदान की जाएगी, जिससे नए और मौजूदा उद्यमियों को अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। प्रशासन का कलन है कि यह शिविर जिले में व्यवसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पाकुड़ बीएड कॉलेज में भारतीय भाषा उत्सव, बहुभाषी शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत को मिला मंच

पाकुड़ पाकुड़ बीएड कॉलेज में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशनुसार भारतीय भाषा उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान और सम्मान का बढ़ावा देना था। कार्यक्रम का संचालन कॉलेज के प्राचार्य डॉ. संजय कुमार द्वारा कोनेक्ट के नेतृत्व में किया गया। डॉलाटन सभा में प्राचार्य भाषाओं की समृद्धि, सांस्कृतिक विरासत और बहुभाषी शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत की भाषाएँ विविधता ही उसकी सबसे बड़ी सांस्कृतिक शक्ति है। उत्सव में विद्यार्थियों ने कई बहुभाषी गतिविधियों को खेला था।

भावुक व्रश्चर्षनी,

बहुभाषी कविता पाठ,

भारतीय लोहारों की प्रस्तुति,

कहावतों पर आधारित खेल और गतिविधियां,

और भाषा कलब की रोचक प्रस्तुतियाँ।

महाविद्यालय परिषद में भाषा मंत्रा का आयोजन भी किया गया, जिसमें हिंदी, संथाली, बांग्ला, उर्दू, तिङ्गी समेत कई भारतीय भाषाओं के स्वरूप लगाए गए। छात्रों ने बहुभाषी लोकालंबन, लोकालंबन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से संवाद की जीवन बनाया। प्राचार्य डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक शक्ति हैं और बहुभाषी शिक्षा राष्ट्र को उद्देश्य के लिए एकत्रित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों की सहाना करते हुए कहा कि यह प्रयास छात्रों को नहीं भाषाओं के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्सव का भरपूर अनंद लिया और भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सम्मान व्यक्त किया।

ए.पी.आई पर क्या मान जाएंगे

डी.यू.वी.सी.या खाली जाएगा ई.सी.  
» कार्यकारी परिषद की बैठक में उठेगा ए.पी.आई का मुद्दा  
» वीमां हो रहे धाने पर बैठे शिक्षक शोधार्थी, तेस दिन बाद भी नहीं बनी बात

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में योग्य शोधार्थीयों और शिक्षकों को साक्षात्कार के बाहर बाहर होते थे बुलाए जाने और ए.पी.आई को हटाने को लेकर धरना दे रखे शिक्षकों को तईस दिन बीत चुके हैं। सभी शिक्षक साठान, डिटा के सम्पन्न और दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी मुद्दा परिषद में मुझे उड़ते थे। कार्यक्रम की बाबूल भाषा और अपील की बाबूल भाषा के स्वरूप लगाए गए। छात्रों ने बहुभाषी लोकालंबन, लोकालंबन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से संवाद की जीवन बनाया।

प्राचार्य डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक शक्ति हैं और बहुभाषी शिक्षा राष्ट्र को एकत्रित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों की सहाना करते हुए कहा कि यह प्रयास छात्रों को नहीं भाषाओं के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्सव का भरपूर अनंद लिया और भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सम्मान व्यक्त किया।

ए.पी.आई पर क्या मान जाएंगे

डी.यू.वी.सी.या खाली जाएगा ई.सी.

» कार्यकारी परिषद की बैठक में उठेगा ए.पी.आई का मुद्दा

» वीमां हो रहे धाने पर बैठे शिक्षक शोधार्थी, तेस दिन बाद भी नहीं बनी बात

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में योग्य शोधार्थीयों और शिक्षकों को साक्षात्कार के बाहर बाहर होते थे बुलाए जाने और ए.पी.आई को हटाने को लेकर धरना दे रखे शिक्षकों को तईस दिन बीत चुके हैं। सभी शिक्षक साठान, डिटा के सम्पन्न और दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी मुद्दा परिषद में मुझे उड़ते थे। कार्यक्रम की बाबूल भाषा और अपील की बाबूल भाषा के स्वरूप लगाए गए। छात्रों ने बहुभाषी लोकालंबन, लोकालंबन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से संवाद की जीवन बनाया।

प्राचार्य डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक शक्ति हैं और बहुभाषी शिक्षा राष्ट्र को एकत्रित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों की सहाना करते हुए कहा कि यह प्रयास छात्रों को नहीं भाषाओं के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्सव का भरपूर अनंद लिया और भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सम्मान व्यक्त किया।

ए.पी.आई पर क्या मान जाएंगे

डी.यू.वी.सी.या खाली जाएगा ई.सी.

» कार्यकारी परिषद की बैठक में उठेगा ए.पी.आई का मुद्दा

» वीमां हो रहे धाने पर बैठे शिक्षक शोधार्थी, तेस दिन बाद भी नहीं बनी बात

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में योग्य शोधार्थीयों और शिक्षकों को साक्षात्कार के बाहर बाहर होते थे बुलाए जाने और ए.पी.आई को हटाने को लेकिन धरना दे रखे शिक्षकों को तईस दिन बीत चुके हैं। सभी शिक्षक साठान, डिटा के सम्पन्न और दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी मुद्दा परिषद में मुझे उड़ते थे। कार्यक्रम की बाबूल भाषा और अपील की बाबूल भाषा के स्वरूप लगाए गए। छात्रों ने बहुभाषी लोकालंबन, लोकालंबन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से संवाद की जीवन बनाया।

प्राचार्य डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक शक्ति हैं और बहुभाषी शिक्षा राष्ट्र को एकत्रित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों की सहाना करते हुए कहा कि यह प्रयास छात्रों को नहीं भाषाओं के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्सव का भरपूर अनंद लिया और भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सम्मान व्यक्त किया।

ए.पी.आई पर क्या मान जाएंगे

डी.यू.वी.सी.या खाली जाएगा ई.सी.

» कार्यकारी परिषद की बैठक में उठेगा ए.पी.आई का मुद्दा

» वीमां हो रहे धाने पर बैठे शिक्षक शोधार्थी, तेस दिन बाद भी नहीं बनी बात

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय में योग्य शोधार्थीयों और शिक्षकों को साक्षात्कार के बाहर बाहर होते थे बुलाए जाने और ए.पी.आई को हटाने को लेकिन धरना दे रखे शिक्षकों को तईस दिन बीत चुके हैं। सभी शिक्षक साठान, डिटा के सम्पन्न और दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी मुद्दा परिषद में मुझे उड़ते थे। कार्यक्रम की बाबूल भाषा और अपील की बाबूल भाषा के स्वरूप लगाए गए। छात्रों ने बहुभाषी लोकालंबन, लोकालंबन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से संवाद की जीवन बनाया।

प्राचार्य डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक शक्ति हैं और बहुभाषी शिक्षा राष्ट्र को एकत्रित होती है। उन्होंने प्रतिभागियों की सहाना करते हुए कहा कि यह प्रयास छात्रों को नहीं भाषाओं के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करता है। इस अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्सव का भरपूर अनंद लिया और भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी और सम्मान व्यक्त किया।

ए.पी.आई प





